

ॐ

# राम संदेश

भक्ति, ज्ञान एवं कर्मयोग की आध्यात्मिक पत्रिका

पावन हों शिक्षा संस्कार  
शुद्ध आचरण का आधार

काम काज हो या व्यापार  
सभी जगह अच्छा व्यवहार



मित्र पड़ोसी घर परिवार  
संबंधों में निश्छल प्रार

यदि हो पाएं तो संसार में  
होगा सुख शान्ति प्रसार

वर्ष 61

अक्टूबर-दिसम्बर 2015

अंक 4

रामाश्रम सत्संग, गाज़ियाबाद

## विषय सूची

(अक्टूबर-दिसम्बर 2015)

क्रमांक		पृष्ठ
1.	साखी.....	कबीर 01
2.	आध्यात्म विद्या कर सार (भाग-11).....	लालाजी महाराज 02
3.	फैज-ईश्वर कृपा.....	डा. श्रीकृष्णलाल जी महाराज 06
4.	साधन .....	अनमोल वचन 10
5.	कृपा-वृष्टि.....	डा. करतार सिंह जी महाराज 13
6.	मुस्लिम संतों के जीवन चरित्र.....	18
7.	कार्यकारिणी.....	21
8.	घोषणा .....	23
9.	कुछ आवश्यक बातें.....	डा. श्रीकृष्णलाल जी महाराज 25
10.	शोक समाचार.....	31
11.	बसन्त भण्डारे की सूचना .....	32

# राम संदेश

संस्थापक

ब्रह्मलीन परमसंत डॉ. श्रीकृष्ण लाल जी महाराज

संरक्षक

ब्रह्मलीन परमसंत डॉ. करतार सिंह जी

सम्पादक

डॉ. शक्ति कुमार सक्सेना

(सर्वोच्च आचार्य एवं अध्यक्ष)

वर्ष 62

अक्टूबर-दिसम्बर 2015

अंक-4

## कबीर साहब की साखी

संगति कीजै संत की, जिन का पूरा मन ।  
 अनतोले ही देत हैं, नाम सरीखा धन ॥  
 कबीर संगत साध की, ज्यों गंधी की बास ।  
 जो कछु गंधी दे नहीं, तौ भी बास सुवास ॥  
 एक घड़ी आधी घड़ी, आधी हूँ से आध ।  
 कबीर संगत साध की, कटै कोटि अपराध ॥  
 जा पल दर्शन साधु का, ता पल की बलिहारि ।  
 सत् नाम रसना बसै, लीजै जनम सुधारि ॥  
 राम बुलावा भेजिया, दिया कबीरा रोय ।  
 जो सुख साधू संग में, सो बैकुण्ठ न होय ॥

परमसंत महात्मा रामचन्द्र जी महाराज

परमसंत महात्मा रामचन्द्र जी महाराज

## अध्यात्म विद्या का सार

### इस्तगना

(गतांक से आगे)

इस्तगना को संतमत में महासुन्न कहा जाता है। इस मुकाम या हालत पर पहुँचे हुए लोग हंस या परमहंस कहलाते हैं। जिनमें इस्तगना है वे सच्चे मानी में तारकुल दुनियाँ (त्यागी) हैं। यूँ तो आम लोगों की निगाहों में वे अब भी दुनियाँ में हैं मगर जिनकी नज़र बारीक है उनको दुनियाँ की तरफ़ से बेपरवाही दीखती है।

**सर बिरहना नेस्तम दारम कुलाहे चार तर्क।**

**तर्क दुनियाँ तर्क उक़बा तर्क मौला तर्क तर्क।।**

अर्थ:- मेरा सर नंगा नहीं है। वह चार तरह की त्याग की टोपियों से ढका हुआ है - पहले संसार का त्याग, फिर परलोक का त्याग, फिर ईश्वर का त्याग और फिर त्याग के विचार का भी त्याग।

कौन कहता है कि दुनियाँ को छोड़ो। क्या पकड़ोगे और क्या छोड़ोगे ? असल में द्वैतवाद की जगह में रहते हुए न गृहस्थ आ सकता है न त्याग, सिर्फ़ दिल की हालत का बदलना है कि न उसे किसी से प्रेम हो न किसी से द्वेष और यही सच्चा वैराग्य है।

**मुड़ मुड़ाये क्या हुआ किया जो घोटम घोट।**

**मनवा को मुड़ा नहीं जा में सारी खोट।।**

तौहीद की मंजिल तय करने पर जब इस्तगना आ गई तब उस जगह पहुँचे हुए की रुह (आत्मा) खुश हो गई। सारे रगड़े-झगड़े दूर हो गये और वे मस्ती में आकर गाने लगे :-

संतों सहज समाधि भली।

गुरु प्रताप भयो जा दिन सुरत न अंत चली ॥  
 आँख न मूंदूं कान न रुटेंदू, काया कष्ट न धाऊं ।  
 खुले नयन में हँस-हँस देखूँ, सुन्दर रूप निहाऊँ ॥  
 कहूँ सो नाम सुनूं सो सुमिरन, खाऊं पिऊं सो पूजा ।  
 गिरह न त्याग एक सम लेखूं, भाव मिटाऊँ दूजा ॥  
 जहां जहां जाऊं सोइ परिक्रमा, जोकुछ करूं सो सेवा ।  
 जब सोऊं तब करूं दण्डवत, पूजूं और न देवा ॥  
 शब्द निरंतर मनुवा अनुसृत, मलिन वासना त्यागी ।  
 उठत बैठत कबहूँ न बिसरे, ऐसी तारी लागी ॥  
 कहे कबीर सो उनमन रहनी, सोइ प्रगट कर गाई ।  
 दुख-सुख एकै परै परम सुख, तेहि सुख रहा समाई ॥

मतलब यह है कि संत की सहज समाधि भली है। जिस दिन से नेह हुआ है उस दिन से आत्मा गुमराह नहीं हुई है, न आँखों को बन्द करता हूँ न शरीर को कष्ट देकर तपस्या करता हूँ। आँखें खुली हुई हैं और मैं हँस-हँसकर खूबसूरत चेहरे का दर्शन करता हूँ। जो मेरे मुंह से निकलता है वही नाम है, जो कुछ सुनता हूँ वही सुमिरन है, जो कुछ खाता या पीता हूँ वही प्रसाद है। मेरी निगाह में ताल्लुक और बेताल्लुकी एक जैसी है। द्वेष का ख्याल दिल से भगा दिया है। जहाँ-जहाँ जाता हूँ वही तवाफ़ (परिक्रमा) है जो काम करता हूँ वही मेरी सेवा व भक्ति है। मेरा सोना या लेट जाना सिजदा व बन्दगी है, अब किसी और देवता की पूजा नहीं करता। दिन रात अन्तरी धुन में मस्त हूँ, वही मेरी सेवा और भक्ति है। ख़राब ख़्यालात आप से आप दूर भाग गये ऐसी मस्ती को समाधि की ताड़ी लगी है। कबीर साहब फ़रमाते हैं “यही उनमानी अवस्था है, मैंने खुले शब्दों में यह गीत गाकर सुनाया है। दुख-सुख से परे एक और निहायत बड़े सुख की हालत है, मैं उसी में मस्त रहता हूँ। ऐसे लोगों के नज़दीक कैद व आज़ाद एक जैसे हैं-न बुरे न भले।

## फ़ना (लय)

पाँच मंजिलें पूरी हो चुकीं, अब छटी कहते हैं फ़ना (भवंर गुफा) को भी साफ़ तरीके से मगर मुख्तसिर (सूक्ष्म) तौर पर बयान करते हैं जिनसे उलझन पैदा होगी। घबराना नहीं। आम लोग फ़ना को अदम (नेस्ती, मिट जाना) कहते हैं। वे करें भी क्या ? असल मतलब को समझ भी नहीं सकते। दुनियाँ में हस्ती तो है मगर नेस्ती का पता नहीं। जो है सो है। इससे ज़्यादा कहना बेकार है। अदम और फ़ना के मानी लुगत (डिवशनरी) या सूफ़ी लोग चाहे कुछ समझावे, मगर वह एक हालत का नाम है जिसमें ज़ाहिर होने की सूरत नहीं है। है ज़रूर मगर इशारा ही इशारा है इसलिए मिसाल से मदद लेनी पड़ती है। मसलन ज्योतिषी ने चाँद, सूरज, सितारों को देखा। नज़र बाहर की तरफ से मुड़ी व दिल में आकर बैठ गयी और अब दिल में वे नूरानी कुरे (प्रकाशित पटल) रौशन हैं क्योंकि वे भीतर ही से निकलकर बाहर जा खड़े हुए थे। उसने गौर करना शुरु किया। नज़ारे बदलते गये। आखिर में दिल की हरकत भी बन्द हो गई और महवियत (बेहोशी की हालत) में चला गया। जहाँ कुछ भी नहीं है। जागते समय हज़ारों सूरतें नज़र आती थीं। अब आँख बन्द हुई। स्वप्न में वही तमाशे नज़र आने लगे क्योंकि जागने की हालत में दिल में से ही बाहर आये थे। अब गहरी नींद आ गई। पर्दा पड़ गया, अब क्या है ? जवाब मिलेगा कुछ नहीं। मगर वह क्या कुछ भी नहीं है ? है तो ज़रूर होने में शक नहीं, मगर नज़र नहीं आता। नज़र कैसे आवे ? आँखें बंद हैं, पपोटे बंद, दिल बंद, कोई देखे भी तो किससे देखे व क्या देखे ? इसी का नाम अदम व फ़ना है और इसी को नेस्ती कहते हैं।

शुरु में इस जगह रुह का उतार हुआ, इस में एक था, नीचे उतरकर अनेक होता गया। क्या इसको कोई समझ नहीं सकता ? गहरी नींद से स्वप्न में उतरकर तब फिर जागृति में आते हैं और फिर जागृति में लौटकर स्वप्न में जाकर गहरी नींद में सो रहते हैं। यह रोजाना का व्यवहार है। सोचिए यह ग़लत है या सही। यही जागना, स्वप्न और गहरी

नींद असल में अलल (उत्पत्ति) बरजस्र (स्थिति) और अदम (लय) हैं। यही सृष्टि स्थित व प्रलय है। यही दुनियाँ, उक़बा और अदम है। यही ब्रह्मा, विष्णु व महेश की असली सूरतें हैं। यही रुहउलकुदस बाप व बेटे हैं। यह सत्-चित्-आनन्द है। इनको समझ लिया तो सब कुछ समझ लिया। अगर इनको नहीं समझा तो कुछ नहीं समझा। दुनिया का इल्म हुआ तो क्या हुआ? यही इल्मी हालत बेदारी (जागने) का इल्म है जो बिल्कुल महदूद (सीमित), नाकिस (तुच्छ) व गैर-मुमम्किल (अधूरा) है। तीन चीजें होती हैं:-

1. देखने वाला,
2. जिसको देखा जाता है,
3. देखने की शक्ति जो देखती है।

फ़नाइयत (लय अवस्था) में देखने वाला मौजूद रहता है, जिसको देख रहा है वह भी मौजूद है। मगर जिससे देखा जाता है (ज्ञान शक्ति) वहाँ पर जाकर वह चीज पीछे रह जाती है और कुछ दीखता नहीं। इसी को 'अदम' (फ़ना) कहते हैं।

फ़ना नेस्ती (मिट जाना) को नहीं कहते। यह रुह (आत्मा) की एक हालत का नाम है जिसे संतों ने उन्मानी अवस्था कहा है। पुराने बुर्जुगों को शायद और लफ़ज़ (शब्द) मिले ही नहीं। इससे फ़ना नाम रखा गया। वे बेचारे करते भी क्या? मगर उनका मतलब नेस्त होना (मिट जाना) नहीं है। अगर पाँच मंज़िलें तै कर लीं तो अब फ़ना की मंज़िल पर आकर आराम नसीब होगा।



रहनुमा उसका हर नक्शेपा हो गया, वह जिधर चल दिया रास्ता हो गया।  
उसने रौशन किया एक दिया राह में, दूर तक साफ़ यह सिलसिला हो गया ॥

प्रवचन गुरुदेव: डा. श्रीकृष्ण लाल जी महाराज

## फैज़-ईश्वर-कृपा

ईश्वर की तरफ से फैज़ (कृपा की धार, ळतंबम) हरेक प्राणी पर पहुँचता है। उसी तरह गुरु का फैज़ हरेक शिष्य पर पहुँचता है। जो उसे याद कर रहा है या उसकी लगन उस तरफ़ लगी है वह उसे महसूस करता है और उसका फायदा उठाता है। सूरज की रोशनी सब पर एक सी पड़ती है। जो चाहते हैं, उसकी गर्मी और प्रकाश से लाभ उठाते हैं। लेकिन चिमगादड़ को कुछ नहीं दिखाई देता। इसमें सूरज का क्या दोष है ? जिसमें जितनी ग्रहण शक्ति ज़्यादा है, जिसमें जितनी लगन अधिक है उतना ही फ़ायदा उसको होता है। जिस किसी को शौक है वह अपनी कोशिश से फैज़ की धार को ख़ैच लेता है। इसमें फैज़ की धार का क्या दोष है ? पत्थर, वनस्पति, जानवर, आदमी अपनी-अपनी बवदेबपवनेदमे (जागृति) के मुताबिक़ फ़ायदा उठा रहे हैं। पत्थर मदेपजपअम (सचेत) नहीं है इसलिए उस पर असर नहीं के बराबर होता है। उसके मुक़ाबले में वनस्पति ज़्यादा मदेपजपअम (सचेत) है, उस पर असर भी ज़्यादा होता है। जानवर वनस्पति से ज़्यादा सचेत होते हैं उन पर और ज़्यादा असर होता है। और मनुष्य सबसे अधिक सचेत है, उस पर सबसे ज़्यादा असर होता है। लेकिन स्वभाव और अधिकार के अनुसार उसका अनुभव हरेक को अलग-अलग होता है। मामूली आदमी ईश्वर की तरफ से बेफ़िकर रहता है, इसलिए वह कम अनुभव करता है। भक्त ने अपने दिल के दरवाजे खोल रखे हैं, वह उस फैज़ को क़बूल कर रहा है, इसलिए वह अनुभव भी मामूली आदमियों के मुक़ाबले ज़्यादा कर रहा है। जितना जिसका ख़्याल उस तरफ़ लगा हुआ है उतना ही आनन्द भी वह अनुभव करता है। ख़्याल भी बराबर रहे और ईश्वर से प्रेम भी हो तब आनन्द मिलता



है। प्रेम तब होगा जब मन तम से हट कर सत् वृत्ति पर आयेगा। अगर तम और रज में फँसा हुआ है तब आनन्द नहीं आयेगा।

### **निज कृपा, गुरु कृपा, ईश्वर कृपा**

परमात्मा तब तक मदद नहीं करता जब तक हम खुद नहीं चाहते। पहले अपनी कोशिश जरूरी है, इसी को निज-कृपा कहते हैं। लेकिन अपनी कोशिश करने से कामयाबी नहीं होती। जब सब यत्न कर लेते हैं, थक जाते हैं, कोई बस नहीं चलता, तब अहंकार पर चोट पड़ती है, वह चकनाचूर हो जाता है, दीनता आने लगती है और कहने लगते हैं- 'हे प्रभो! हमारे बस का नहीं है, बिना तुम्हारी कृपा के कुछ नहीं होगा।' जब दीन बन जाते हैं तो खुदी का पर्दा हट जाता है और रास्ता साफ होने लगता है, गुरु कृपा का आभास होने लगता है। यह सोच कर मत बैठो कि परमात्मा बड़ा दयालु है, वह सब काम खुद ही कर लेगा। पुरुषार्थ करो, यही निज-कृपा है फिर गुरु-कृपा और तब ईश्वर-कृपा होती है। आराम से लेटे रहो, कुछ करो धरो मत और सोचो कि सब हो जायेगा? कोई आदत बुरी पड़ गई है और छूटती नहीं है तो उसे दूर करने की कोशिश करो। यदि किसी के डर की वजह से कोई आदत छूटती है तो वह जमउचवतंतल (अस्थायी) है। जहाँ डर गया और फिर वह आदत आ गई। उससे नफरत पैदा हो जाये तब वह चमतउंदमदजसल (स्थायी रूप से) जायेगी। इसका एक सरल तरीका संतों ने बताया है- गुरु से प्रेम बढ़ाओ और जितना प्रेम बढ़ता जायेगा उतना दूसरी चीजों से नफरत होती जायेगी। गुरु के प्रेम में तुम वह काम करना स्वयं बन्द कर दोगे जो उन्हें पसन्द नहीं है। इस तरह बुरी आदतें धीरे-धीरे खुद छूटती चली जायेगी।

### **राजी-ब-रजा (यथा लाभ सन्तोष)**

इस संसार में सब दुखी हैं। अस्पतालों में जाकर देखो तो दुःख का पारावार नहीं मिलेगा। किसी का लड़का बीमार है तो वह उसके दुख से दुखी है। कोई रुपये की कमी की वजह से दुखी है। ऐसे अनेकों सांसारिक दुख हैं और इन्हीं को दूर करने का यत्न मनुष्य दिन रात करता रहता

है। किन्तु इन दुखों के दूर हो जाने पर असली सुख की प्राप्ति नहीं होती। स्वाहिश पैदा करते हो तो संस्कार बनते हैं और उन्हें भुगतने के लिए आवागमन का चक्र चलता रहता है। जब तक यह ज्ञान नहीं होगा कि यह दुनियाँ सुख की जगह नहीं है, यहाँ तो दुख ही दुख है, इससे छुटकारा पाने की स्वाहिश पैदा नहीं होगी और जब तक इससे छुटकारा नहीं होगा, सच्चा सुख नहीं मिलेगा। भगवान बुद्ध की शिक्षा इस मामले में सीधी सादी है।

आवागमन से छूटने की स्वाहिश करना चाहते हो तो सब स्वाहिशों को छोड़ो। अच्छी स्वाहिश करोगे, अच्छा मिलेगा, बुरी करोगे बुरा मिलेगा। यहाँ तो हर चीज़ का बदला है। जो दुख सुख या बिमारी आती है, पिछले कर्मों का नतीजा है। ये भोगने तो पड़ेंगे ही। उन्हें अगर खुशी से भोग लिया जाए तो आगे के संस्कार नहीं बनेंगे। इसीलिए सूफियों में राजी-ब रज़ा की शिक्षा दी जाती है। जिस हाल में मालिक ने रखा है उसमें खुश रहो।

दूसरा तरीका यह है कि यह ख्याल करो कि अच्छा हुआ इतनी सी ही तकलीफ़ हुई या इतना ही नुकसान हुआ। अगर और ज़्यादा तकलीफ़ होती या और भारी नुकसान होता तो क्या होता? सबसे ऊँची राजी-ब-रज़ा यह है कि जब कोई दुख तकलीफ़ आये तो यह ख्याल करे कि बड़ा अच्छा हुआ संस्कार कटा। इस संस्कार के कटने से कुछ तो नज़दीकी ईश्वर से हुई। 'संतों की निराली राजी-ब रज़ा है और वह अनोखी तथा बेजोड़ है। जब कोई कष्ट आता है तो वे खुश होते हैं- कहते हैं कि ईश्वर हमारा प्रीतम है, वह तो हमें छेड़ रहा है, क्या अदा है 'उसकी', कभी हमें तकलीफ़ देता है कभी आराम। उन्होंने अपने आपको ईश्वर में इतना लय कर दिया है कि उन्हें यह भी ख्याल नहीं आता कि हमारे संस्कार कट रहे हैं या हम ईश्वर के नज़दीक जा रहे हैं। उन्हें अपने जिस्म तक का होश नहीं रहता कि हम मर गये हैं या जिन्दा हैं। तकलीफ़ को छोड़ने का तो

उनके सामने सवाल ही नहीं उठता, वे तो उसका स्वागत करते हैं। किसी सन्त ने कहा है:-

ऐ बला आ, कि तू मेरे लिये रहमत होगी,  
तेरे पहलू में छिपी मेरे माशूक की सूरत होगी।

वायदे वस्ल चूँ शब्द नजदीक,  
आतिशे शौक तेज तर गरदद।

(पिया मिलन की घड़ी पास ज़र्यों-ज़र्यों आवे।  
प्रेम विरह की ज्वाला तड़पन बढ़ती जावे।)

जितना रास्ता कटता जायेगा उतनी ही अपने निज घर की याद आती जायेगी। खिंचावट उधर की तरफ़ बढ़ती जाती है, तड़प बढ़ती जाती है। लेकिन माया ऐसी आसानी से निकलने नहीं देती और अटका देती है। अच्छे-अच्छे गिर जाते हैं। यदि गुरु से प्रेम है और उनमें लय है और उन पर पूर्ण रूप से भरोसा है तो उनकी कृपा होती है और साधक फिर रास्ते पर चल पड़ता है। इसीलिए जब तकलीफ़ आये तो अपने भाग्य को सराहे और सोचे कि यह प्रभु की बड़ी कृपा है।

(दि. 12.04.1968 सिकंद्राबाद)

□□□□

सन्त हृदय नवनीत समाना,  
कहा कविन्ह परि कहै न जाना।

निज परिताप द्रवै नवनीता,  
पर दुख द्रवहिं संत सुपुनीता।।



परमसंत डा.श्रीकृष्ण लाल जी महाराज के अनमोल वचन

## साधन

अपने ख्यालों को हमेशा शुद्ध करते जाओ। ख्यालों पर काबू पाने की कोशिश करो। बुद्धि को दुनियावी ख्यालों से हटा कर सन्तों की बानी, शास्त्रों के उपदेश और परमात्मा के नाम में लगाओ। इन्द्रियों का आचार ठीक करो। कोशिश करो कि इन्द्रियाँ दुनियावी गिलाजत (ग़न्दगी) देखने की बजाय हर जगह ईश्वर को देखें। यही रहनी सहनी का ठीक करना है।



सबसे अच्छा तरीका यह है कि इस बात को ज़हन नशीन (स्मरण) कर लो और पुरता कर लो कि यह दुनिया ईश्वर की है, तुम्हारी नहीं है। तुम भी ईश्वर के हो और यह सब काम ईश्वर का है। वह जैसा चाहेगा वैसा ही होगा। अपना बोझ उस पर डाल दो। वह जिस हाल में रखे, खुश रहो। इंसान की सब ख्वाहिशात पूरी नहीं होती हैं, इसीलिये वह दुखी होता है। अगर खुश रहना चाहते हो तो जहाँ उसने रखा है और जिस हाल में रखा है उसमें खुशी से रहो। ईमानदारी से काम करो तथा भगवान का नाम लेते जाओ।



चलते फिरते यह ख्याल करना चाहिए कि मेरी जगह गुरु ने ले ली है, मैं वही हूँ, यही सहज योग है। इसके अभ्यास के लिये न कोई निश्चित वक्त है और न ही कोई जगह है। हर एक मनुष्य हर समय और जगह यह अभ्यास कर सकता है।



दुनिया अगर बुरी लगती है तो ईश्वर मिलना चाहिए। आनन्द जिसकी हमको तलाश है, वह मिलना चाहिए। अगर नहीं मिलता तो यह कैसा वैराग है ? यह तो लखूटा वैराग है, मन्द वैराग है।



रास्ता आसान नहीं है। इसमें दृढ़ विश्वास और अभ्यास की बड़ी जरूरत है। रुकावटें आती हैं और ऐसा लगता है कि तरक्की नहीं हो रही, लेकिन निराश नहीं होना चाहिए। एक साहब ने किताब में पढ़ा कि राम नाम का जाप करने से ईश्वर के दर्शन हो जाते हैं। मंदिर गये, और आँख बंद करके बैठ गये और जाप करने लगे। दस पन्द्रह मिनट बाद आँखें खोल दीं कि ईश्वर के दर्शन नहीं होते और सोच लिया कि रास्ता गलत है। यही हाल अभ्यासियों का है। अभ्यास करते नहीं और चाहते हैं कि ईश्वर के दर्शन हो जायें, आत्मा के पर्दे अभी हटे नहीं हैं और रास्ते को गलत समझ बैठे।



असली वैराग वह है कि सब चीजें मौजूद हैं लेकिन किसी में तबियत नहीं लगती, पागल कुत्तों की तरह इसलिये मारा-मारा फिरता है कि किसी तरह आत्मा का आनंद मिल जाये।



दुनियाँ को भोगो ताकि पिछले संस्कार समाप्त हो जायें। इस तरह दीन और दुनिया दोनों बन जायेंगे। जो लोग परमात्मा और गुरु से सच्चा प्रेम करते हैं और दुनियाँ में रहते हुए अपने दुनियावी फर्ज पूरे करते हैं वे एक ही जन्म में भवसागर से पार हो जाते हैं।



गलती न करने की अपेक्षा गलती करके उसे सुधारना अच्छा है। जिस प्रकार खेत में उपजे हुये खरपतवार को उखाड़ कर उसी में सड़ने गलने को छोड़ देने से उसकी उपज शक्ति बढ़ती है, उसी प्रकार गलती सुधारने से हृदय बलवान बनता है।



जो लोग यह सोच कर बैठ जाते हैं कि ईश्वर कृपा करेगा तो सब ठीक हो जायेगा और वे भवसागर से पार हो जायेंगे, यह सोचना भूल और आलस्य है। ईश्वर उन की सहायता करता है जो स्वयं पुरुषार्थ करते हैं और उसकी ओर चलते हैं।

मन ही असली बंधन का कारण है। जो साधन इस बंधन को ढीला करे वही असली साधन है, अन्यथा समय का नष्ट करना है।



जो स्वयं आजाद (मुक्त) है वही दूसरे को आजाद करा सकता है। जो खुद फँसा हुआ है न वह खुद आजाद हो सकता है और न दूसरे को आजाद करा सकता है। जो साधन इस (मन और आत्मा की) गाँठ को खोलने में मदद दे वही असली साधन है और वही असली धर्म या मजहब है। जो गुरु इस गाँठ को खोल दे वही असली गुरु है और सब धोखा है।



तकलीफें बेहतरी (कल्याण) के लिये आती हैं। ईश्वर को जिसका उद्धार मंजूर होता है उस पर शुरू शुरू में तकलीफें आती हैं। इनसे आत्मा का मैल धुलता है। तकलीफों से पुराने संस्कारों का कफ़ारा (बदल) हो जाता है।



तकलीफें हमारे प्रभु का निमंत्रण हैं। जिद्दा पर शिकायत का एक शब्द भी नहीं आना चाहिए। मजबूरी से भोगना भी कोई भोगना है ?

उसे खुशी से भोगना चाहिए और अपने प्रियतम का तोहफ़ा समझना चाहिए। उसमें वही आनंद लेना चाहिए जो आनंद अपने दुनियावी यानी साँसारिक माशूक़ (प्रियतम) के लिये, दुनियावी सुख के लिये लेते हैं। क्या हमारा प्रियतम प्रभु दुनियावी माशूक़ से भी गिरा हुआ है ? उसके रास्ते में जो भी तकलीफें आवें उन्हें खुशी से भोगना चाहिए।



प्रवचन परमसंत डॉ. करतार सिंह जी साहब

## कृपा वृष्टि तो हर क्षण हो रही है, लेकिन उसे ग्रहण करने की तत्परता चाहिए...

परमात्मा की कृपा या गुरुजनों की कृपा जिसको हम फ़ैज़ या प्रसादी कहते हैं प्रति क्षण हम सब पर होती रहती है। उस कृपा को हमेशा ग्रहण करते रहना चाहिए, इसमें विस्मृति नहीं होनी चाहिए। हम जब बातें करते हैं, खाना खाते हैं या काम करते हैं तब उस कृपा को ग्रहण करना भूल जाते हैं। अतएव सदा सतर्क रहना चाहिए। प्रभु की, संतजनों की कृपा प्रसादी जो हम पर प्रतिक्षण बरस रही है, उसे चाहे कुछ भी कर रहे हों, ग्रहण करते रहना चाहिए।

इस प्रसादी में केवल आनन्द ही नहीं, इसमें ईश्वर के सारे गुण विद्यमान हैं। जैसे सूर्य और सूर्य की किरणों में कोई भेद नहीं है, उसी प्रकार परमपिता परमात्मा और उसकी कृपा-प्रसादी जो हमको मिल रही है, उन दोनों में कोई अन्तर नहीं है। परमात्मा का कोई रूप नहीं है। उसके रूप रंग और भेद को कोई नहीं जान पाया है। कोई कहता है कि वह सर्वव्यापक है, कोई कहता है वह आनन्द का सरोवर है तो कोई उसे सर्वज्ञ और सर्वशक्तिमान मानता है। प्रभु के तो अनन्त रूप, स्वरूप हैं और वह अरूप भी है। उसका पूरा अनुमान लगाना तो असंभव है। जैसे अग्नि के पास बैठने से अग्नि की उष्मा की अनुभूति होती है, उसी प्रकार इस फ़ैज़ के मिलने से हमें अनुभव होता है कि परमपिता परमात्मा कितने आनन्द के भंडार हैं।

आप विश्वास रखिये कि यदि प्राकृतिक नियमों का पालन करते रहेंगे और इस फ़ैज़ को ग्रहण करते रहेंगे तो आपको जीवन में किसी

प्रकार की कमी नहीं आयेगी- न धन की, न स्वास्थ्य की और न ही आत्मिक गुणों की। अमेरिका में आजकल बहुत चर्चा हो रही है आत्मिक साधनों से बीमारी को दूर करने की। वह गलत नहीं हैं परन्तु कुछ लोग दुरुपयोग कर रहे हैं। आध्यात्मिक प्रक्रियाओं द्वारा उपचार करने के बारे में जो लिखा जा रहा है वह गलत नहीं है।

ईश्वर सब गुणों का भंडार है। हम यदि अपने आपको पूर्णतया समर्पण कर दें तो हममें भी वही गुण आ जायेंगे। ईश्वर सत्-चित्त-आनन्द स्वरूप है। यदि हम समर्पित भाव से और तत्परता से प्रयास में लग जायें तो हम भी सत्य स्वरूप हो जायेंगे, ज्ञान स्वरूप हो जायेंगे, आनन्द स्वरूप हो जायेंगे। और यह प्रयास है- गुरुदेव द्वारा बतायी गई साधना या अभ्यास जो कि बड़ा ही सरल साधन है। शायद इसी सरलता के कारण ही लोग-बाग इसको महत्व नहीं देते हैं। आज विदेशों में लोग एक-एक मिनट की शान्ति के लिए हजारों खर्च कर रहे हैं। परन्तु यहाँ तो ईश्वर की कृपा मुफ्त में बँट रही है।

यदि कोई व्यक्ति इस प्रसादी को अपने आप ग्रहण नहीं कर सकता है तो उससे निवेदन है कि वह किसी महापुरुष की सेवा में जाये। उनके पास जाकर कुछ न करे- शारीरिक, मानसिक किसी प्रकार का प्रयास न करे, केवल सेवा में बैठे। कुछ ही क्षण बाद उसे अनुभव होगा कि भीतर और बाहर दोनों तरफ बड़ी ही शान्ति और आनन्द की लहर चल रही है। ऐसी अनुभूति के समय में कईयों को तो होश ही नहीं रहता। वह कहते हैं कि आज तो इतना सरुर (नशा) आया जो कभी पहले आया ही नहीं। वह नशा नहीं है, वह आत्मा का गुण है - आनन्द है। उस आत्मिकता की दशा में मन स्थिर हो जाता है, बुद्धि की चंचलता ख़त्म हो जाती है, तर्क वितर्क के द्वन्द ख़त्म हो जाते हैं, स्थिरता आ जाती है। एक सरुर सा भीतर में अनुभव होता है जिसको हम आनन्द कहते हैं। यह साधक को बहुत अच्छा लगता है।



इसी आत्मिक आनन्द की प्राप्ति के लिए निरन्तर सतर्क रहना चाहिए। जैसे चातक का मुँह हमेशा खुला रहता है कि पता नहीं कब स्वाति नक्षत्र की बूँद उसके मुँह में पड़ जाये। जब एक पक्षी इतना इन्तज़ार कर सकता है तो मनुष्य, जिसको पता है कि परम पिता परमात्मा की कृपा हर वक़्त उस पर बरस रही है, क्यों न अपने हृदय का मुखारबिन्द खोल कर रखे। क्यों न अपने आप का समर्पण करे। आज तक स्वाति बूँद किसी ने देखी नहीं है, हो सकता है वह आत्मा का ही एक रूप हो। हमारे यहाँ का साधन है कि हमें हमेशा उस स्वाति बूँद की, उस रुहानी फ़ैज़ की प्रतीक्षा में प्रतिक्षण रहना चाहिए। हमारा मुख खुला रहना चाहिए और उस महान उपहार को ग्रहण करने के लिए साधक को उचित है कि अपनी प्रकृति को बदले। साधक के स्वभाव में दीनता आनी चाहिए जो कि अहंकार त्यागने पर ही संभव होगी। अहंभाव के रहते हुए प्रभु कृपा या प्रभु की प्राप्ति कैसे होगी ?

**जब तक मैं था हरि नाहिं, अब हरि हैं मैं नाहिं।  
प्रेम गली अति सांकरी, या में दो न समाहिं।।**

इस अहंकार का अर्थ है 'मैं' और 'मेरापन'। इसको छोड़ दें। अहंकार का त्याग करके दीनता को अपनायें। दीनता का अर्थ यह नहीं है कि अपना काम निकालने के लिए हम कुछ समय के लिए मीठे शब्दों और मधुर व्यवहार का प्रयोग करें। दीनता का मतलब है - अपना कुछ रहे ही नहीं। यहाँ तक कि साधना में साधक को अपना भान ही न रहे, केवल परमपिता परमात्मा ही हो। ध्यान-अवस्था में ध्यान करने वाला रहे ही नहीं।

दीनता के एक और अर्थ यह है कि "जेहि विधि राखे राम, तेहि विधि रहिए"। भगवान ने गीता में भी यही कहा है। कबीरदास जी और अन्य सन्त महापुरुषों ने भी यह कहा है कि अपनी इच्छा कुछ नहीं है, अपनी आशा-अभिलाषा कुछ नहीं है, गुरु या ईश्वर जिधर ले जाये वही ठीक है, हमारे हित में है। फिर चाहे जिन परिस्थितियों में रखे - चाहे

सुखदायी हों या दुखदायी। जिज्ञासु के हृदय में संतोष हो। भगवान कृष्ण भी यही कहते हैं 'मेरा वही भक्त मुझे अति प्रिय है जो संतुष्ट रहता है। जो किसी परिस्थिति में - दुख में, सुख में - सम रहता है और हमेशा हर हाल में प्रसन्न रहता है।'

**मेरा मुझमें कुछ नहीं, जो कुछ है सब तेरा।**

**तेरा तुझको सौंपते, क्या लागे है मेरा॥**

ईश्वर से या गुरु से सम्बन्ध पति-पत्नी जैसा सम्बन्ध है। हम राधा जी से प्रेरणा लेते हैं। राधा जी भगवान श्रीकृष्ण की विवाहिता स्त्री नहीं थीं। हमारे देश के लिए यह गर्व की बात है कि प्रत्येक स्त्री अपने पति की राधिका बनना चाहती है, भगवान विष्णु की लक्ष्मी बनना चाहती है। इसी तरह जिज्ञासु भी जिसमें ईश्वर प्राप्ति की आकांक्षा रहती है उसको भी गापियों से प्रेरणा लेनी चाहिए। भक्ति का सर्वोत्तम भाव महापुरुषों ने कान्ता भाव को बताया है। मथुरा की प्रत्येक गोपी के हृदय में यही भावना उठ रही है कि वह भी राधिका जी बन जाये ओर भगवान कृष्ण की समीपता का लाभ उठाये। भक्त भी यही चाहता है। मथुरा, वृन्दावन में अभी भी कुछ ऐसे लोग हैं जो स्त्रियों के रूप में रहते हैं और बातचीत भी स्त्रियों जैसी करते हैं और इसी रूप में भगवान को याद करते रहते हैं। उनका यह पहनावा, उनकी यह भगवान के प्रति श्रद्धा और सतत स्मृति हमें प्रेरणा देती है कि 'कान्ता-भाव' की भक्ति साधना को अपनाकर भगवान के चरणों में कैसे पहुँचा जा सकता है।

इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए हमें प्रेम मार्ग अपनाना पड़ेगा। हमारे देश की परम्परा में साधारण स्त्री अपना तन-मन-धन सब कुछ अपने पति के लिए न्यौछावर कर देती है। उसमें प्रेम, दीनता, सहयोग, सहनशीलता और त्याग व बलिदान जैसे गुण भरे हैं जो हमें प्रेरणा देते हैं। ईश्वर की प्राप्ति के लिए जिनके मन में अभिलाषा है उनके हृदय में ऐसे गुण होना आवश्यक है। जिज्ञासु साधक में जब तक स्त्री जैसी लचक और लोच नहीं आयेगी, वह ईश्वर को प्राप्त करने का अधिकारी नहीं बन पायेगा।

प्रभु के प्रिय इन सद्गुणों को अपनाने (और साथ-साथ अपने दोषों-अवगुणों को छोड़ते जाने के लिए) गुरुजन बताते हैं कि जिज्ञासु स्वयं अपनी स्थिति को परखे-स्वनिरीक्षण करे। हमारे एक बुर्जुग थे जो कहा करते थे कि प्रत्येक व्यक्ति को एक डायरी रखनी चाहिए और दिनचर्या उसमें लिखनी चाहिए कि आज क्या किया, क्या बुराई की, क्या नेकी की। वैसे तो गुण दोष, दोनों ही प्रभु के चरणों में अर्पण कर देने चाहिए परन्तु बुराईयों का स्वनिरीक्षण करना चाहिए और दृढ़ संकल्प करना चाहिए कि दूसरे दिन वह बुराईयाँ न हों। फिर धीरे-धीरे अपने आचरण का सुधार करते हुए बुराईयों को छोड़ते चले जायें एवं सद्गुणों को अपनाते चले जायें ताकि हम परमात्मा की कृपा के, गोपियों के समान भगवान् कृष्ण की चरण रज के अधिकारी बन सकें।

गुरु की प्रसन्नता में हमारा सब कुछ है। उन्हें प्रसन्न करने के लिए एक ही सरल साधन है और वह है सेवा। सेवा क्या है? उसके परामर्श, उसके आदेशों का पालन करना। सेवा, निष्काम भाव से की गई सेवा तो ईश्वर की भक्ति के लिए, उसकी समीपता प्राप्त करने के लिए एक महान् साधन है। सेवा से ही दीनता आती है, सेवा से प्रेम मिलता है, सेवा से ज्ञान मिलता है और सेवा से ही आनन्द लाभ होता है।

संक्षेप में, ईश्वरीय कृपा की (फ़ैज़ या अमृत-प्रसादी की) वर्षा तो होती ही रहती है जिसका आनन्द प्राप्त करने के लिए जिज्ञासु साधकों को सदा तत्पर रहना होगा। अपने गुरु (इष्टदेव) की सेवा में जाने से उस अमृत धारा के आनन्द की अनुभूति स्वतः होने लगेगी। धीरे-धीरे उनकी सत्संगति के प्रभाव तथा उपदेशों का पालन व्यावहारिक रूप में करते जाने से निरन्तर आत्मिक प्रगति होती जायेगी। कमी है तो अपनी लगन और तत्परता की।

गुरुदेव सबका कल्याण करें।



## प्राचीन मुस्लिम संतों के जीवन चरित्र

### शाहशुजा

तपस्वी शाहशुजा राजवंशीय थे। उनका जन्म स्थान केरमान प्रदेश में था। वे 'मीत-उल-हकमा (ज्ञानियों का दर्पण) नामक ग्रन्थ के रचयिता थे। अबु तोराब, ईपर, आदि अनेक महात्माओं की उन्होंने सत्संगति की थी। वे धनवान की भाँति सुख से रहते थे, पर उनका चित्त सांसारिक बातों से अलहदा रहता। एक दिन वे नशा गये, वहाँ तपस्वी अबु हाफिज़ ने उनको सम्मानित कर कहा था - "मैं फकीरी पोशाक में जिस बात की खोज में था, वही वस्तु आज मुझे एक गृहस्थ के वेश में भी मिली है।"

शाहशुजा के एक परम धार्मिक युवती पुत्री थी। केरमान के बादशाह ने उस कन्या से शादी करने की इच्छा प्रकट की। राजाज्ञा के उत्तर में शाहशुजा ने तीन दिन की मोहलत माँगी। इस बीच में उसने सब मस्जिदें छान डाली। तीसरे दिन एक मस्जिद में उसे एक भावुक फकीर भावपूर्वक नमाज़ पढ़ता दिखाई दिया। नमाज़ पूरी होने पर शाहशुजा ने उससे पूछा- युवक तुम्हारा निकाह हो चुका है ?

युवक ने उतर दिया - नहीं

शाहशुजा - तू निकाह करना चाहता है ?

युवक - मेरे सरीखे दरिद्र को कौन अपनी कन्या देगा ? ? मेरे पास तो तीन पैसों से एक कौड़ी भी ज़्यादा नहीं है।

शाहशुजा - मैं अपनी पुत्री तुम्हें ब्याह दूँगा। अपने तीन पैसे में से तुम एक एक पैसे का लोबान, रोटी और शक्कर ले आओ और मेरे साथ चलो।

इस प्रकार शाहशुजा ने अपनी पुत्री का विवाह उस रात्रि को उस फकीर के साथ कर दिया। अपार धन सम्पत्तिशाली बादशाह को कन्या

न देकर उस तपस्वी ने अपनी कन्या का पाणि-ग्रहण आनंद पूर्वक एक ईश्वर प्रेमी, धर्म परायण निर्धन के साथ कर दिया।

विवाह के बाद पति पत्नि अपने झोंपड़े में गये। पत्नि ने देखा झोंपड़े के एक कोने में जल-पात्र पर एक रोटी का टुकड़ा पड़ा है। पूछने पर पति ने बताया-आज के लिये मैंने यह रोटी कल से ही रख दी है।

इतना सुनते ही पत्नि बहुत निराश हुई, उसकी निराशा को देख कर पति ने कहा - मैं पहले से ही जानता था कि धनवान शाहशुजा की पुत्री मुझ गरीब की सह-धर्मिणी बन ही नहीं सकेगी। युवती बोली-प्रियतम् आपकी निर्धनता से मैं निराश नहीं हुई हूँ किंतु मेरी निराशा का कारण है आपकी प्रभु-परायणता और श्रद्धा की कमी। 'कल क्या खाऊँगा?' यह सोच कर आपने यह रोटी का टुकड़ा बचा कर रखा है, यह कितनी अनास्था की बात है? न जाने मेरे पिता जी ने आपको किस कारण पसंद कर लिया। उन्होंने बीस वर्ष तक मेरा पालन करके यही समझाया है कि जो ईश्वर पर पूर्ण विश्वास रखने वाला है और वैराग्यवान होगा उसी से मेरा विवाह करेंगे। किंतु दुख की बात है कि आप तो एक रोटी के टुकड़े के लिये भी ईश्वर का भरोसा नहीं करते। यह सुन कर वह युवक फकीर स्तब्ध और लज्जित हो गया। उसने उसी समय उस रोटी के टुकड़ों को बाहर फेंक दिया।

एक बार तपस्वी अबु हाफिज़ ने शाहशुजा को इस भाव का एक पत्र लिखा - "बन्धु! अपनी इन्द्रियों की विषयवासना तथा अपने अपराधों को विचार कर मैं तो निराश हो गया हूँ।" उत्तर में शाहशुजा ने लिखा - "आपके पत्र को मैंने हृदय से लगा लिया है। इन्द्रियों के बारे में विचार करें तो सचमुच निराशा हाती है। केवल ईश्वर की महानता एक ऐसी वस्तु है जिसका विचार कर मन आशान्वित होता है। ईश्वर के प्रति आशा उत्पन्न होने से, उससे डर कर चलने की वृत्ति भी जागती है। मैं जिस समय इन्द्रियों का निग्रह करने में असमर्थ हो जाता हूँ तो परमेश्वर का

स्मरण करता हूँ, और जब मैं उसको याद करता हूँ तो फिर वह जरूर मेरी खबर लेता है।”

### उपदेश वचन

1. जो महापुरुष अपने महत्व की ओर लक्ष्य नहीं रखता, उसी का महत्व सबसे अधिक है। जो अपने महत्व का ध्यान रखता है, वह तो सर्वथा महत्वहीन है। जो प्रभु प्रेमी अपने प्रेम की ओर लक्ष्य नहीं रखता उसी के प्रेम की महत्ता सर्वोपरि है और जो अपने प्रभु प्रेम पर निगाह रखता है उसमें यदि लेशमात्र प्रेम होता है तो वह भी नष्ट हो जाता है।
2. वैराग्य ईश्वर प्राप्ति का गूढ़ उपाय है। उसके तो गुप्त रखने में ही कल्याण है, जो वैराग्य को प्रकट करते हैं उनका वैराग्य उनसे दूर भाग जाता है।
3. साधुता के ये तीन लक्षण हैं। पहला, संसार का ऊँच-नीच तुम्हारे हृदय में प्रवेश न कर पावे। मिट्टी की भाँति सोने चाँदी को भी त्याग देने की क्षमता तुममें होनी चाहिए। दूसरा, लोकापवाद पर दृष्टि मत दो, न लोक प्रशंसा से फूलो और न लोक निंदा से अप्रसन्न हो। तीसरा है, तुम्हारे हृदय में लौकिक विषय की कामना निःशेष हो जाये। दूसरों को विषय भोग और स्वादिष्ट खान-पान में जैसा आनंद मिलता है वैसा ही आनंद तुम्हें उन भोगों के त्याग में मिले।
4. सहनशीलता के तीन लक्षण हैं। पहला है निंदा का त्याग, दूसरा है निर्मल संतोष और तीसरा है आनंद पूर्वक ईश्वर की आज्ञाओं का पालन।
5. जो मनुष्य अशुद्ध दर्शन और नेत्रों और भोगों से इन्द्रियों को बचाता है, नित्य ध्यान योग से अन्तःकरण को निर्मल रख अपने चरित्र को शुद्ध करता है और धर्म पूर्वक अर्जित अन्न से पालन करता है, उसकी शान में कोई कमी नहीं।



## रामाश्रम सत्संग (रजि.) गाज़ियाबाद

रजिस्टर्ड ऑफिस: 9-रामाकृष्णा कॉलोनी, जी.टी.रोड, गाज़ियाबाद, उत्तर प्रदेश

**डा. शक्ति कुमार सक्सेना**

**अरविन्द मोहन**

सर्वोच्च आचार्य एवं अध्यक्ष

मंत्री

### घोषणा: संस्था की कार्यकारिणी समिति-(2015-2016)

मैं, शक्ति कुमार सक्सेना, पुत्र स्व. श्री कृष्ण सहाय सक्सेना, सर्वोच्च आचार्य एवं अध्यक्ष रामाश्रम सत्संग (रजि.) गाज़ियाबाद (उ.प्र.) संस्था की वर्तमान कार्यकारिणी भंग करता हूँ। वर्ष 2015-2016 के लिए संस्था के विधान की धारा 10(ग) में प्रदत्त अधिकारों के तहत नवीन कार्यकारिणी समिति, पदाधिकारी एवं सदस्यों की निम्नवत् घोषणा करता हूँ, जो विधान की धारा 9(ग) के अनुरूप एक वर्ष हेतु वैध रहेगी :-

क्र.	पद	नाम	पता	व्यवसाय
1.	अध्यक्ष	डॉ. शक्ति कुमार सक्सेना	एस ए 36, शास्त्रीनगर, गाज़ियाबाद	डाक्टर
2.	मंत्री	श्री अरविन्द मोहन	2बी, नीलगिरी-III, सेक्टर - 34, नौएडा	सर्विस
3.	कोषाध्यक्ष	श्री ईश्वर स्वरूप सक्सेना	के. एम. -144 ए कविनगर, गाज़ियाबाद	सेवानिवृत्त
4.	सदस्य	श्री भजन शंकर	कोठी नं. 84/14, दिल्ली रोड, गुड़गाँव	सेवानिवृत्त
5.	सदस्य	कैप्टन के.सी. खन्ना	आर -11/182, राजनगर, न्यू गाज़ियाबाद	सेवानिवृत्त
6.	सदस्य	श्री उमाकांत प्रसाद	207, संयम प्रतीक अपार्टमेन्ट, खाजपुरा, पटना	सेवानिवृत्त

7. सदस्य	डॉ. दिनेश कुमार श्रीवास्तव	छवनी मौ. वार्ड नं.- 4 पो. आ. भभुआ, जिला कैमूर	सेवानिवृत्त
8. सदस्य	डॉ. मुद्रिका प्रसाद	साकेतपुरी, मुजफ्फरपुर बिहार	सेवानिवृत्त
9. सदस्य	श्री रमेश चन्द्र जौहरी	सिन्ध का बाड़ा, जनक गंज, ग्वालियर	सेवानिवृत्त
10. सदस्य	श्री. आर.पी शिरोमणी	मूलचन्द मार्किट शमशाबाद रोड, आगरा	सेवानिवृत्त
11. सदस्य	श्री प्रियासरन	105-हिमालय टॉवर अहिंसा खण्ड-2, इन्द्रापुरम, गाजियाबाद	सेवानिवृत्त
12. सदस्य	श्री अनिल कुमार	6, चेतना समिति ए. जी. कालोनी, पटना	सर्विस
13. सदस्य	श्री विष्णु शर्मा	आर-27, नारायणा विहार गोपालपुरा, जयपुर	सर्विस
14. सदस्य	प्रो. आर.के. सक्सेना	33-देशबन्धु सोसाईटी आई.पी. एक्सटेंशन नई दिल्ली	सर्विस

(ह0)

डॉ. शक्ति कुमार सक्सेना

अध्यक्ष एवं आचार्य

दिनांक 22-10-2015

रामाश्रम सत्संग (रजिस्टर्ड) गाजियाबाद

प्रतिलिपि - मंत्री, रामाश्रम सत्संग रजि. को निर्देशित करते हुए कि इस सूची को राम सन्देश के आगामी अंक में प्रकाशित करने की व्यवस्था करें।



## रामाश्रम सत्संग (रजि.) गाजियाबाद

रजिस्टर्ड ऑफिस: 9-रामाकृष्णा कॉलोनी, जी.टी.रोड, गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश

**डा. शक्ति कुमार सक्सेना**  
सर्वोच्च आचार्य एवं अध्यक्ष

36, शास्त्री नगर  
गाजियाबाद

### घोषणा

मैं डॉ. शक्ति कुमार सक्सेना पुत्र स्व. श्री कृष्ण सहाय सक्सेना, सर्वोच्च आचार्य एवं अध्यक्ष रामाश्रम सत्संग (रजि.) गाजियाबाद, एतद् द्वारा शिक्षक वर्ग, रामाश्रम सत्संग (रजि.) गाजियाबाद की परिवर्द्धित सूची सर्वसाधारण हेतु निम्न प्रकार से जारी करता हूँ ।

पूज्य गुरुदेव द्वारा जो इजाजतें जारी की जा चुकी हैं वह पूर्ववत् रहेंगी । नए भाईयों, जिनकी नियुक्ति की गई है, उनके नाम व गुरुदेव द्वारा पूर्व में घोषित नाम नीचे प्रकाशित किये जा रहे हैं :-

**इजाजत बैत शर्तिया (आचार्य पदवी प्रतिबंधित) क. 3ए :-**

1. श्री भजन शंकर, गुड़गाँवा

**इजाजत बैत शर्तिया (आचार्य पदवी प्रतिबंधित) क. 3 :-**

1. श्री रामसागर लाल, गोरखपुर

2. श्री उमाकान्त प्रसाद, पटना

3. श्री दिनेश कुमार श्रीवास्तव, भभुआ

4. श्री कृष्ण चन्द्र खन्ना, गाजियाबाद

उपरोक्त में से किसी को भी इजाजत देने का अधिकार नहीं होगा ।

**इजाजत तालीम (शिक्षक) क. 2:-**

1. डॉ. मुद्रिका प्रसाद, मुजफ्फरपुर

2. श्री गिरिजानन्द लाल, बक्सर

3. श्री रमेश चन्द्र जौहरी, ग्वालियर

4. श्री आर. पी. शिरोमणी, आगरा

5. श्री अशोक प्रधान, नई दिल्ली

6. श्री विष्णु शर्मा, जयपुर

7. श्री भुवनेश्वर नाथ वर्मा, भभुआ

8. श्री हरबंस लाल भायला, झुन्झुनू

9. श्री महेश चन्द्र कुलश्रेष्ठ, रेवाड़ी

10. डॉ. राजेश चन्द्र वर्मा, आरा

11. श्री पारसमणी ठाकुर, देवघर

12. श्री मोहन सहाय श्रीवास्तव, वाराणसी

13. डॉ. सुधीर कुमार, मोतीहारी

14. प्रो. आदर्श किशोर सक्सेना, ग्वालियर

15. श्री आदर्श कुमार सक्सेना, वाराणसी

16. श्री रामवृक्ष सिंह, चकिया

17. श्री छैल बिहारी श्रीवास्तव, कानपुर

18. श्री नारायण द्विवेदी, इन्द्रगढ़

19. श्री ओ पी एम तिवारी, बैंगलूरु 20. श्री जयशंकर नाथ त्रिपाठी, कुशीनगर  
उपरोक्त में से किसी को भी बैत करने का अधिकार नहीं होगा।

**इजाजत मॉनीटर (सत्संग कराने की) क्र. 1:-**

- |  |  |
|--|--|
| 1. श्री हरि शंकर तिवारी, सासाराम       | 2. श्री गौड़ चन्द्र घोष, भागलपुर         |
| 3. श्री रमेश प्रसाद सिन्हा, मुजफ्फरपुर | 4. श्री जगजीवन पंडित, बरगनिया            |
| 5. श्रीमती आभा सिंह, बोकारो            | 6. श्री जटाशंकर लाल, गया                 |
| 7. श्री जे. सी. पी. सिन्हा, जमशेदपुर   | 8. श्री अवध बिहारी सिन्हा, सासाराम       |
| 9. श्री अरविन्द कुमार, वाराणसी         | 10. श्री प्यारे मोहन, बक्सर              |
| 11. श्री महेश प्रसाद वर्मा, सीतामढ़ी   | 12. श्री कन्हैया पाल, हाजीपुर            |
| 13. श्री कामेश्वर प्रसाद चौधरी, दरभंगा | 14. श्री राजेश कुमार सिंह, मुंगेर        |
| 15. श्री बिनोद कुमार, गोपालगंज         | 16. श्री भीम प्रसाद बरनवाल, झाड़ा        |
| 17. श्री एस. पी. श्रीवास्तव, मुगलसराय  | 18. श्री राजेन्द्र सिन्हा, लखनऊ          |
| 19. श्री रमेश चन्द्रा, लखनऊ            | 20. श्री हरपाल सिंह, एटा                 |
| 21. श्री विनीत मिश्रा, अलवर            | 22. श्री राकेश कुमार श्रीवास्तव, चंडीगढ़ |
| 23. श्री सतीश कुमार, समस्तीपुर         | 24. श्री केंदार राय, मधुबनी              |
| 25. श्री रंजीत प्रसाद सिंह, पटना       | 26. श्री सुनील कुमार, पटना               |
| 27. श्री बी सी महरोत्रा, राँची         |  |

उपरोक्त सज्जनों को इजाजत दी जाती है कि वे केवल भाइयों को एकत्र करके सत्संग करा सकेंगे। उन्हें या नये भाइयों को तालीम (शिक्षा) देने या बैत (दीक्षा) देने की इजाजत नहीं है।

उपरोक्त घोषित इजाजतें आगामी घोषणा होने तक जारी रहेंगी और यदि इनके अतिरिक्त किसी के पास कोई और किसी भी प्रकार की इजाजत है तो वह स्वतः ही प्रभावहीन हो जाती है।

(ह०)

डॉ. शक्ति कुमार सक्सेना

अध्यक्ष एवं आचार्य

दिनांक 22-10-2015

रामाश्रम सत्संग (रजिस्टर्ड) गाजियाबाद

प्रतिलिपि - मंत्री, रामाश्रम सत्संग रजि. को निर्देशित करते हुए कि इस सूची को राम सन्देश के आगामी अंक में प्रकाशित करने की व्यवस्था करें।

# दादा गुरुदेव द्वारा बताई गई कुछ आवश्यक बातें

(गतांक से आगे)

16. संतमत में देवी देवताओं को नहीं पूजते लेकिन उनकी अवहेलना या निरादर भी नहीं करते। केवल निर्गुण परमात्मा को ही मानते हैं और उसी की प्राप्ति संतमत का लक्ष्य होता है। पूजा वक्त के पूरे सतगुरु की, की जाती है क्योंकि उसी के स्थूल शरीर रूपी मंदिर में वह निर्गुण परमात्मा विराजता है तथा उसका स्वरूप अभ्यासी के अंतर में ध्यान के द्वारा प्रगट होगा। यह बिना सतगुरु की कृपा के सम्भव नहीं होता, बिना प्रीति और प्रतीत के, बिना सेवा भाव और दीन भाव के, बिना धर्म शास्त्र पर चले और बिना उसकी आज्ञा पालन के सतगुरु की कृपा का पात्र कोई नहीं बन सकता।
17. बाहरी सेवा सतगुरु के स्थूल शरीर और अंतर सेवा सतगुरु के निज रूप की की जाती है। शब्द, प्रकाश और प्रेम ही सतगुरु का निज रूप है और उस निज रूप की सेवा यह है कि शब्द को घट में सुनना, और शब्द, प्रकाश या प्रेम जैसा जिस सतगुरु ने आदेश दिया हो के सहारे अपनी सुरत को चढ़ाना चाहिये। जब तक सतगुरु के प्रत्यक्ष रूप के प्रति गहरा प्रेम नहीं होगा तब तक जैसा चाहिये न तो शब्द ही खुलेगा, न प्रकाश ही दिखेगा और न ही अंतर में गहरा प्रेम ही उमड़ेगा। जब तक ऐसी स्थिति नहीं पैदा होगी तब तक यदि सतगुरु के बाहरी स्वरूप में गहरा प्रेम है तभी थोड़ी बहुत चढ़ाई अंतर में हो सकेगी। बस सतगुरु से प्रेम करो जिसका मूल गुरु है सेवा। तन, मन धन से सेवा।
18. संतमत के अभ्यासियों को चाहिए कि विरह और उमंग का साथ ले कर अपना अभ्यास प्रतिदिन नियम के साथ करें। अपने मन, सुरत और दृष्टि को पहले उस स्थान पर ठहरायें जहाँ सतगुरु

- ने बताया हो। फिर वहाँ से ऊपर को चढ़ाई करें। चढ़ाई करने में नीचे से ऊपर को बहुत जोर न लगायें, सहज भाव से करें। इस बात की होशियारी रखें कि दुनियाँ के विचार मन में न आने दें और मन इधर उधर की तरंगें न उठाने पावे। यदि ऐसा अभ्यास करेंगे तो थोड़ा बहुत आनंद और रस पूजा में अवश्य मिलेगा।
19. यदि अभ्यास के समय विरह तथा उमंग की दशा न हो तो, कुछ एक भजन या पद या गजल (जैसा मन को अच्छा लगे) जिसमें चेतावनी हो, ईश्वर प्रेम हो आदि को पढ़ना चाहिए, उसके शब्दों पर ध्यान देना चाहिये और गौर करना चाहिए फिर अभ्यास में बैठें। अपनी कमी और बुराईयों को देखते हुये मन में दीनता लायें और कोई प्रार्थना चाहे वह पद्य के रूप में हो या गद्य के रूप में हो, ईश्वर की दया प्राप्त करने के लिये करें।
20. बहुधा देखा गया है कि उपरोक्त युक्तियों से मन की गुणावन दूर होने में बहुत सफलता मिलती है और वह अभ्यास में टिकने लगता है, जिससे पूजा में रस तथा आनंद आने लगता है। परन्तु कोई कोई ऐसे भी होते हैं जिन्हें इन युक्तियों से भी जैसा चाहिये वैसा लाभ नहीं होता। ऐसी स्थिति में समझ लेना चाहिए कि मन अत्यंत मलिन है। उसकी सफाई का इलाज संतों ने बताया है कि कुछ दिनों होशियारी के साथ सत्संग करें, सत्गुरु और उनके प्रेमियों की सेवा करें, सत्संग में जो प्रवचन होते हैं उन्हें ध्यान पूर्वक चित्त देकर सुने और उन पर मनन करें और उन्हें अपने व्यवहारिक जीवन में सक्रिय रूप दें। तब कुछ समय बाद मन की सफाई होने लगेगी और जैसे जैसे मन साफ होने लगेगा उसमें शौक-चाव और उमंग पैदा होने लगेंगे जिसके फलस्वरूप अभ्यास में मन का ठहराव होगा तथा रस व आनंद भी मिलने लगेगा।
21. कभी कभी अभ्यासी के मन में यह उत्कंठा पैदा होती है कि जो अभ्यास मैं कर रहा हूँ क्या वह मुझ से ठीक ठीक बन पड़ रहा है या वह गलत है। यहाँ दो बातें हैं। अभ्यासियों की दो किस्में होती हैं। एक तो ऐसे अभ्यासी होते हैं जिनमें प्रेम अंग उभरा

हुआ होता है। दूसरे वे अभ्यासी होते हैं जिनमें विवेक और वैराग्य सबल होता है। प्रेमी अभ्यासी के मन में बहुधा प्रश्न उठते ही नहीं, वह अपने गुरुदेव के प्रेम में मग्न रहता है और उसकी सभी चेष्टायें प्रायः उसी प्रेम को उत्तरोत्तर बढ़ाने हेतु होती हैं। इस प्रकार की उत्कंठा यदा-कदा उसके मन में उठती भी हैं तो वह समर्पण का आसरा लेता है और कहता है - हे सत्गुरु! मैं नहीं जानता कि मेरा अभ्यास ठीक से हो रहा है या नहीं, मैं तो आपकी शरणागत हूँ, भला हूँ या बुरा हूँ, हूँ तो आपका ही। मेरा अभ्यास ठीक से होता है या नहीं, यह मैं क्या जानूँ। मैं तो आपका दामन पकड़े हुये हूँ, मेरी लाज अब आपके हाथ में है। इससे अधिक और मैं कुछ नहीं जानता। इस प्रकार वह अपनी खुदी को मिट्टी में मिलाता चलता है और अभ्यास ठीक है या नहीं इन बखेड़ों में नहीं पड़ता।

22. जब अभ्यास के लिये जाओ तो शुद्ध हो कर जाओ। एक है बाहर की शुद्धता और दूसरी है अंदर की। संभव हो तो नहा कर अपने शरीर को स्वच्छ कर लो और साफ कपड़े पहन लो। पूजा करते समय सर पर टोपी लगाना या फिर सर को ढका रखना आदर का सूचक है। जब अपने गुरुदेव के पास जाओ तो आदर पूर्वक प्रणाम करो और उनकी आज्ञा प्राप्त करके दीनता पूर्वक जहाँ बै. ठने को कर्हे बैठ जाओ। निगाह और ध्यान उनके चरणों की तरफ रखो और जब वे अभ्यास करायें तो जिस तरह वे करायें उसी तरह करो। गुरु की अनुपस्थिति में जब पूजा करने जाओ तो यह ख्याल रखो कि किसी महापुरुष के सामने जा रहे हो, झुक कर प्रणाम करो, फिर कदम बढ़ाओ और उन्हें हाजिर नाजिर जानकर ख्याली तौर पर दीनता पूर्वक उनके श्रीचरणों में मस्तक टेक दो और फिर पूजा के लिये बैठो। गुरु के सामने बैठ कर किसी गैर ख्याल का आना बेअदबी में शुमार किया जाता है।
24. जब सतगुरु की दया से अभ्यासी की सुरत और मन सिमट कर ऊपर की ओर चढ़ने लगे तो उसके लिये यह सावधानी रखने को

कहा गया है कि सुरत और मन को बहुत अधिक और बहुत ऊँचा न खींचें। धीरे धीरे जितना बर्दाश्त होता जाये, उतनी ही चढ़ाई करें, कभी कभी ऐसा होता है कि आंतरिक चढ़ाई करते समय दिल तड़पने लगता है। यह इस बात का सूचक है कि उसमें भगवान के चरणों की प्राप्ति की तड़प पैदा होने लगी है। इस हालत को जहाँ तक हो सहन करें और अपना अभ्यास जारी रखें। जब ऐसी हालत हो कि तड़प सहन न हो तो उस समय के लिये या जब खुद बखुद ऊपर को खिंचता मालूम होता हो और उसकी बर्दाश्त न हो सके या कोई तकलीफ या डर मालूम होने लगे तो उस समय के लिये अभ्यास छोड़ दें। ( चाहे कुछ समय के बाद फिर शुरू कर दें )

अभ्यास के बाद कुछ काम काज शुरू कर दें जिससे शरीर और इन्द्रियाँ शिथिल न होने पायें। इस प्रकार करने से धीरे धीरे उस तड़प की हालत बर्दाश्त होने लगेगी।

25. किसी अभ्यासी को अभ्यास में जल्दी ही ऐसा रस और आनंद आने लगता है और उसकी तबियत में ऐसी मस्ती आने लगती है कि वह संसार की ओर से अपने आप को बेपरवाह समझने लगता है और संसार और उसके भोग विलास और सांसारिक कामों से उसे वैराग्य होने लगता है और आवेश में आकर अपने कुटुम्ब, परिवार और रोजगार का जल्दी से त्याग कर देता है। साधकों को भली प्रकार से समझ लेना चाहिए कि शुरु-शुरु में इस तरह का आवेश टिकाऊ नहीं होता। इस प्रकार के आवेश में आकर जल्दबाजी न करें। अपने रोजगार और कुटुम्ब परिवार का त्याग न कर बैठें, नहीं तो पछताना पड़ेगा। ऐसी दशा में बहुत सावधानी रखनी चाहिए। कुछ ही समय में सत्गुरु की कृपा से वैराग्य की यह हालत हज़म होने लगेगी और स्थिति साधारण हो जायेगी।
26. प्रत्येक परिस्थिति में अभ्यासी को चाहिए कि अपनी कमियों पर सदा दृष्टि रखें, दीनता कभी न छोड़ें। बीच बीच में गुरु कृपा से

ऐसा होता है कि मस्ती और बेपरवाही की सी हालत अनुभव होने लगती है किन्तु जब तक त्रिकुटी और दसवें द्वार में न पहुँचे और अधिक आनंद न प्राप्त हो तब तक उस हाल को स्थायी न समझें।

यहाँ पर यह प्रश्न हो सकता है कि इस बात की क्या पहचान है कि अभ्यासी त्रिकुटी या किसी अमुक चक्र में पहुँच गया। इसका उत्तर यह है कि यह सब बातें यानी रास्ते का भेद और पहचान संतों ने जगह जगह अपनी वाणी में लिखी हैं। परन्तु उससे अच्छा यह है कि सत्गुरु से पूछें। उत्तम बात यह है कि रास्ता चलते जायें और यदि आनंद दिनोंदिन बढ़ता जाता है, प्रभु के चरणों में प्रेम दिन रात अधिक समय तक रहता है तो इस उलझन में न पड़ें कि त्रिकुटी कहाँ है, कौन सा दसवाँ द्वार है या अमुक चक्र कौन सा है। यह जान लेने से अभिमान हो जाता है, जिससे गिरावट होने का डर है। अपनी दृष्टि और इरादा ऊँची से ऊँची चढ़ाई पर रखें तथा शरीर और इन्द्रियों से धर्म शास्त्र के अनुसार दुनिया का काम काज और लोक व्यवहार करते रहें।

27. सतंमत के अभ्यासियों को चाहिए कि मन लगाकर भजन करें। भजन से तात्पर्य यह है कि चाहे तो कोई प्रार्थना, पद या स्तुति तल्लीनता से भावविभोर हो कर गावें और चाहे मन में पढ़ें परन्तु उसके भाव पर ध्यान रहे। प्रार्थना के लिये कोई विशेष पद्य निश्चित हो ऐसा नहीं है। जिससे रुचि हो, जिसके द्वारा मन ईश्वरोन्मुख हो, जिससे मालिक का प्रेम उमड़े वही प्रार्थना या भजन उत्तम है। चाहे वह गद्य हो या पद्य, उर्दू में हो या हिन्दी में या किसी अन्य भाषा में।
28. जो नाम गुरु ने दिया हो उसका सुमिरन भी भजन के ही अन्तर्गत आता है। भजन के अतिरिक्त ध्यान भी एकाग्रचित्त होकर करना चाहिए। भाव विभोर हो कोई प्रार्थना पहले कर लें और उसके बाद ध्यान करें तो चित्त को एकाग्र करने में सुगमता होती है।
29. कभी कभी मन ऐसा सोचा रहता है कि न तो भजन में मन

- लगता है न ध्यान में। इसका उपाय यह है कि सत्संग करें। यदि सत्संग प्राप्त न हो तो संतों की वाणी का पाठ नित्य नियम पूर्वक और समझ समझ कर करें।
30. जब कभी अभ्यासी को अभ्यास में रस या आनंद न आवे या आते जाते अचानक रुक जाये तो समझ लेना चाहिए कि या तो किसी ओछे कर्म का चक्कर है या किसी ऐसे भोजन का प्रभाव है जो अधर्म की कमाई का है। इसलिये संतो ने इस बात पर बल दिया है कि जो अन्न ग्रहण करें वह सात्विक हो और धर्म की कमाई का हो।
31. अभ्यासी को प्रत्येक परिस्थिति में प्रभु की कृपा और दया का उन्हीं के आश्रित रहेगा तो वे अवश्य उसे अपनी ओर खींचेंगे।



### परमसंत महात्मा रामचंद्रजी महाराज द्वारा निर्देशित ईश्वर प्राप्ति का निश्चित साधन

- ❖ जिक्र ख़फ़ी का जाप (दिल का जाप) किया करें।
- ❖ नाजिन्स, ग़ैर आदमी और ग़ैर सौहबत के नक्शों से दिल साफ़ रखें।
- ❖ परमात्मा के सिवाय किसी की तरफ़ तवज्जो न करें।
- ❖ यकसुई (एकाग्रता) के साथ दिल हाज़िर रखने का पक्का इरादा करें।
- ❖ सत् और मालिक की तरफ़ उनसियत और लगाव हासिल करें।
- ❖ अपने आपको मेट कर उसी में महब और लय हो जायें।
- ❖ इसी काम में अपने आपको मिटा दें। सबसे ज़्यादा नज़दीकी रास्ता और असल पद पर पहुँचने का यक़ीनी ज़रिया है।



## शोक समाचार

सखेद सूचना दी जाती है कि पिछले वर्ष रामाश्रम सत्संग के जिन बहन-भाइयों का देहावसान हो गया है उनकी सूची इस प्रकार है :-

- 1 मोतिहारी के सत्संगी
  - श्री नवल किशोर वर्मा का दिनांक 5/05/2015 को।
  - श्रीमति शैल देवी का 27-1-2014
  - श्री सच्चिदानंद श्रीवास्तव का 9-11-2014 (आप गोरखपुर के श्री रामसागर लाल जी के ज्येष्ठ पुत्र थे)
- 2 दरभंगा के सत्संगी
  - श्री संतोष कुमार लाभ के पिता जी श्री नन्द किशोर लाभ का 17-02-2014 को और
  - श्री शिव कुमार लाभ का 13-05-2014 को
  - श्री शम्भु नारायण श्रीवास्तव का 14-04-2014 को
  - श्री सुरेन्द्र प्रसाद सिंह का 09-07-2014 को
  - इन्दु कुमार लाभ का 02-06-2014 को
- 3 जमशेदपुर (टाटानगर) के -
  - वरिष्ठ सत्संगी श्री नरेश चन्द्र धर का 10-10-2014 को। और आप की पत्नी श्रीमति लीला धर का 27-11-2014 को। आप सत्संग की जमशेदपुर शाखा के आरम्भ से ही शिक्षक एवं इंचार्ज भी थे।
  - जमशेदपुर में ही श्रीमति प्रभावती देवी धर्म पत्नी श्री प्रयाग ठाकुर का 6-05-2014 को तथा श्री सुरेश प्रसाद की माताजी का।
- 4 बक्सर के श्री ओम प्रकाश केसरी की माता जी श्रीमती सावित्री देवी का 08-02-2015 को
- 5 सासाराम के श्री बबन प्रसाद की धर्म पत्नी श्रीमति शांति देवी का 2-10-2014 को
  - श्री ददन जी की सास श्रीमति शांति कुँअर का 28-10-2014 को।

- 6 मधुबनी के श्री गंगा प्रसाद राम का दिनांक 11-06-2014 को।
- 7 चकिया के श्री राम जी प्रसाद का 25-07-2015 को एक सड़क दुर्घटना में, आप चकिया शाखा में शिक्षक के रूप में सत्संग की सेवा कर रहे थे।
- 8 आरा के युवा सत्संगी श्री चन्द्रिका प्रसाद की 14-09-2015 को अचानक हृदय गति रुक जाने से।
- 9 मुज़्ज़फ़रपुर के वरिष्ठ सत्संगी डॉ. मुद्रिका प्रसाद जी के समधी श्री हिमांशु वेदसैन का एक लम्बी बिमारी के बाद 22-01-2015 को निधन को गया, (आप दिल्ली के श्री हिमांशु शेखर के ससुर भी थे) और मुज़्ज़फ़रपुर के ही श्री चन्द्रशेखर सिंह की माता जी का दिनांक 05-03-2015 को।

परम पुज्य गुरुदेव के चरणों में प्रार्थना है कि इन सभी दिवंगत आत्माओं को शान्ति एवं सद्गति प्राप्त हो तथा इनके विरहाकुल परिवारी प्रियजनों को वियोग व्यथा सहने की शक्ति और धैर्य मिले।

- डा. शक्ति कुमार सक्सेना

## बसन्त भंडारा

सहर्ष सूचना दी जाती है कि बसन्त भंडारे का आयोजन 11,12,13 फरवरी 2016 को देवघर, बिहार में होना निश्चित हुआ है। इस संदर्भ में आवश्यक जानकारी इस प्रकार है-

सत्संग स्थल :- बर्नवाल सेवा सदन (बर्नवाल धर्मशाला)।

यह स्थान जसीडीह रेलवे स्टेशन से 5 किलोमीटर की दूरी पर है (पुराना ट्रैकर के स्टैंड के सामने)।

सभी सत्संगी भाई-बहनों से प्रार्थना है कि अपने आने की सूचना करीब एक महीने पहले अवश्य दे दें। इस संदर्भ में नीचे दिये गये व्यक्तियों में से किसी को भी सम्पर्क कर सकते हैं।

1. श्री पारसमणी ठाकुर- फोन- 09931135272
2. श्री रामजी सिंह- फोन- 09801801362
3. श्री बलराम बर्नवाल- 09204495659

-मंत्री रामाश्रम सत्संग

## विषय सूची

क्रमांक		पृष्ठ
1.	साखी.....कबीर	01
2.	आध्यात्म विद्या कर सार (भाग-11).....लालाजी महाराज	02
3.	फैज-ईश्वर कृपा.....डा. श्रीकृष्णलाल जी महाराज	06
4.	साधन.....अनमोल वचन	10
5.	कृपा-वृष्टि.....डा. करतार सिंह जी महाराज	13
6.	मुस्लिम संतों के जीवन चरित्र.....	18
7.	कार्यकारिणी.....	21
8.	घोषणा.....	23
9.	कुछ आवश्यक बातें.....डा. श्रीकृष्णलाल जी महाराज	25
10.	शोक समाचार.....	31

## राम सन्देश के नियम

1. आध्यात्मिक विद्या के गुप्त और अनुभवी रहस्यों तथा सदाचार-शिक्षा को सरल भाषा में जनता तक पहुँचाना हमारी राम सन्देश पत्रिका का मुख्य उद्देश्य है।
2. राम-सन्देश में आत्मिक, नैतिक, सामाजिक तथा आध्यात्मिक उन्नति के लेख ही छपते हैं, राजनैतिक या रोमांचक लेख नहीं। रचनाओं में काट-छाँट करने अथवा छापने या न छापने की स्वतंत्रता सम्पादक को है।
3. राम सन्देश का वर्ष जनवरी में आरम्भ होता है। चन्दा 20 बीस रुपये है। एक वर्ष से कम तथा आजीवन ग्राहक नहीं बनाये जाते। चन्दा दशहरा भंडारों में या मैनेजर, राम संदेश को, 9-रामाकृष्णा कॉलोनी, जी. टी. रोड, गाजियाबाद (उ.प्र.) 201009 के पते पर दिसम्बर के अंत तक अवश्य भिजवा दें।
4. राम सन्देश डाक द्वारा नहीं भेजा जायेगा। इसका वितरण भंडारों पर ही किया जायेगा। कृपया अपनी प्रति लेना न भूलें।

### राम सन्देश रजि. ऑफिस

9-रामाकृष्णा कॉलोनी, जी.टी. रोड, गाजियाबाद - 201009

**मुद्रक, प्रकाशक एवं सम्पादक : डॉ. शक्ति कुमार सक्सेना**

मुद्रण : अंकोर पब्लिशर्स प्रा. लिमिटेड, बी-66, सैक्टर-6, नौएडा-201301



## राम संदेश के नियम

1. आध्यात्मिक विद्या के गुप्त और अनुभवी रहस्यों तथा सदाचार-शिक्षा को सरल भाषा में जनता तक पहुँचाना हमारी राम सन्देश पत्रिका का मुख्य उद्देश्य है।
2. राम-सन्देश में आत्मिक, नैतिक, सामाजिक तथा आध्यात्मिक उन्नति के लेख ही छपते हैं, राजनैतिक या रोमांचक लेख नहीं। रचनाओं में काट-छाँट करने अथवा छापने या न छापने की स्वतंत्रता सम्पादक को है।
3. राम सन्देश का वर्ष जनवरी में आरम्भ होता है। वार्षिक चन्दा 20 (बीस) रुपये है। एक वर्ष से कम तथा आजीवन ग्राहक नहीं बनाये जाते। चन्दा दशहरा भंडारों में या मैनेजर, राम संदेश को, 9-रामाकृष्णा कॉलोनी, जी. टी. रोड, गाजियाबाद (उ.प्र.) 201009 के पते पर दिसम्बर के अंत तक अवश्य भिजवा दें।
4. राम सन्देश डाक द्वारा नहीं भेजा जाता है। इसका वितरण भंडारों पर ही किया जाता है। कृपया अपनी प्रति लेना न भूलें।

## राम संदेश

रजि. ऑफिस

9 – रामाकृष्णा कॉलोनी, जी.टी. रोड,  
गाजियाबाद – 201009

मुद्रक, प्रकाशक व संपादक : डॉ. शक्ति कुमार सक्सेना

मुद्रण : अंकोर पब्लिशर्स (प्रा.) लिमिटेड, बी-66, सैक्टर-6, नोएडा-201301